संधि *(Sandhi)*

दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं। इसके तीन भेद हैं — स्वर, व्यंजन और विसर्ग संधि।

मध्यम · विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

दो वर्णों के परस्पर मेल से उनमें जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे संधि कहते हैं।

जब दो शब्द पास आते हैं, तो पहले शब्द का अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द का पहला वर्ण मिलकर प्रायः एक नया वर्ण बना लेते हैं। यही **संधि** है।

कैसे बनती है

विद्या + आलय = विद्या**लय** — यहाँ *आ + आ* मिलकर *आ* हो गया।

सूर्य + उदय = सूर्य**ोदय** — यहाँ *अ + उ* मिलकर *ओ* हो गया।

संधि किए हुए शब्द को उसके मूल रूप में अलग कर देना **संधि विच्छेद** कहलाता है।

ध्यान दें

संधि और समास को एक न समझें। संधि में **वर्णों** का मेल होता है और वर्ण बदल जाता है; समास में **शब्दों** का मेल होता है और बीच का कारक-चिह्न लुप्त होता है। *हिमालय* संधि है (हिम + आलय), *राजपुत्र* समास है (राजा का पुत्र)।

संधि के भेद

संधि के तीन भेद हैं — इस आधार पर कि मेल किन वर्णों का हुआ।

स्वर संधि

जब **दो स्वरों** का मेल होता है, तो स्वर संधि होती है। इसके पाँच उपभेद हैं।

1. दीर्घ संधि

नियम: दो समान स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) मिलकर उसी का दीर्घ रूप बन जाते हैं।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	धर्मार्थ
विद्या + आलय	आ + आ = आ	विद्यालय
कवि + इंद्र	इ + इ = ई	कवींद्र
मुनि + ईश	इ + ई = ई	मुनीश
भानु + उदय	उ + उ = ऊ	भानूदय

2. गुण संधि

नियम: *अ* या *आ* के बाद *इ/ई* आए तो **ए**, *उ/ऊ* आए तो **ओ**, और *ऋ* आए तो **अर्** हो जाता है।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
देव + इंद्र	अ + इ = ए	देवेंद्र
महा + ईश	आ + ई = ए	महेश
सूर्य + उदय	अ + उ = ओ	सूर्योदय
महा + उत्सव	आ + उ = ओ	महोत्सव
देव + ऋषि	अ + ऋ = अर्	देवर्षि

3. वृद्धि संधि

नियम: *अ* या *आ* के बाद *ए/ऐ* आए तो **ऐ**, और *ओ/औ* आए तो **औ** हो जाता है।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
एक + एक	अ + ए = ऐ	एकैक
मत + ऐक्य	अ + ऐ = ऐ	मतैक्य
वन + ओषधि	अ + ओ = औ	वनौषधि
महा + औषध	आ + औ = औ	महौषध

4. यण संधि

नियम: *इ/ई* के बाद कोई **भिन्न** स्वर आए तो *इ* का **य्** हो जाता है; इसी प्रकार *उ/ऊ* का **व्** और *ऋ* का **र्**।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
यदि + अपि	इ + अ = य्	यद्यपि
अति + अधिक	इ + अ = य्	अत्यधिक
सु + आगत	उ + आ = व्	स्वागत
अनु + अय	उ + अ = व्	अन्वय
पितृ + आज्ञा	ऋ + आ = र्	पित्राज्ञा

ध्यान दें

यण संधि की शर्त यह है कि बाद में आने वाला स्वर **असमान** हो। *कवि + इंद्र* में दोनों *इ* हैं, इसलिए वहाँ यण नहीं, दीर्घ संधि होगी — *कवींद्र*।

5. अयादि संधि

नियम: *ए, ऐ, ओ, औ* के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो वे क्रमशः **अय्, आय्, अव्, आव्** हो जाते हैं।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
ने + अन	ए = अय्	नयन
नै + अक	ऐ = आय्	नायक
पो + अन	ओ = अव्	पवन
पौ + अक	औ = आव्	पावक

व्यंजन संधि

जब **व्यंजन का व्यंजन या स्वर** से मेल हो, तो व्यंजन संधि होती है।

संधि विच्छेद	संधि रूप	क्या हुआ
सत् + आनंद	सदानंद	त् का द्
उत् + हार	उद्धार	त् + ह् का द्ध
जगत् + नाथ	जगन्नाथ	त् का न्
सम् + तोष	संतोष	म् का अनुस्वार
उत् + चारण	उच्चारण	त् का च्
अभि + सेक	अभिषेक	स का ष

विसर्ग संधि

जब **विसर्ग (ः)** का मेल किसी स्वर या व्यंजन से हो, तो विसर्ग संधि होती है।

संधि विच्छेद	संधि रूप	क्या हुआ
निः + चल	निश्चल	विसर्ग का श्
निः + तेज	निस्तेज	विसर्ग का स्
मनः + रथ	मनोरथ	विसर्ग का ओ
दुः + आत्मा	दुरात्मा	विसर्ग का र्
निः + आहार	निराहार	विसर्ग का र्

ध्यान दें

संधि के नियम याद करने का सबसे कारगर तरीका नियम रटना नहीं, बल्कि **संधि विच्छेद का अभ्यास** है। किसी भी बने हुए शब्द को तोड़कर देखें कि कौन-सा स्वर किससे मिला — कुछ ही शब्दों के बाद नियम स्वयं स्पष्ट होने लगते हैं।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

“सूर्योदय” का संधि विच्छेद कीजिए और संधि का नाम बताइए।

उत्तर सूर्य + उदय। अ + उ = ओ, अतः यह गुण संधि है।

“स्वागत” में कौन-सी संधि है?

उत्तर यण संधि। सु + आगत — उ के बाद भिन्न स्वर आ आने से उ का व् हो गया।

“कवि + इंद्र” की संधि कीजिए। यहाँ यण संधि क्यों नहीं होगी?

उत्तर कवींद्र। यण संधि तब होती है जब बाद में असमान स्वर आए; यहाँ दोनों इ हैं, इसलिए दीर्घ संधि होगी।

“मनोरथ” का संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तर मनः + रथ। यह विसर्ग संधि है — विसर्ग ओ में बदल गया।

संधि और समास में मूल अंतर क्या है?

उत्तर संधि में वर्णों का मेल होता है और वर्ण में विकार आता है; समास में शब्दों का मेल होता है और बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है।